Answers to RHA–DS1/Set-1

1. (*i*) (ग) मनुष्य।

(*ii*) (ख) बुद्धिजीवी।

(*iii*) (ग) कथन (A) सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(*iv*) (ग) वे लोग सदा कर्म में विश्वास रखते हैं।

(*v*) (घ) कथन (2) और (3) सही हैं।

2. (*i*) (ग) कवि का मृत-सा शरीर फिर से जीने योग्य हो जाता।

(*ii*) (ग) कथन (A) व कारण (R) सही हैं और कथन (A), कारण (R) की सही व्याख्या है।

(*iii*) (ख) झरनों से

(*iv*) (क) कवि दुख में भी सुख ढूँढ़ता रहा।

(*v*) (ख) इस जन्म में पूरे करने का प्रयास करेगा।

3. (*i*) (ख) जीप कस्बा छोड़कर आगे बढ़ गई और हालदार साहब इस मूर्ति के बारे में ही सोचते रहे।

(*ii*) (ग) बालगोबिन भगत मँझोले कद के गोरे-चिट्टे आदमी थे।

(*iii*) (घ) घर में आए दिन इसलिए जमकर बहसें होती थीं क्योंकि वहाँ विभिन्न राजनैतिक पार्टियों का जमावड़ा लगा रहता था।

(*iv*) (घ) (3) और (4)

(*v*) (ख) 1–(*ii*), 2–(*iii*), 3–(*i*)

4. (*i*) (क) हालदार साहब के द्वारा चश्मेवाले की देशभक्ति का सम्मान किया गया।

(*ii*) (ख) भाववाच्य

(*iii*) (ग) कर्तृवाच्य

(*iv*) (घ) (2) और (4) सही हैं।

(*v*) (ख) 1–(*ii*), 2–(*iii*), 3–(*i*)

5. (*i*) (घ) जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, अपादान कारक

(*ii*) (क) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण, 'चिल्लाना' क्रिया का विशेषण

(*iii*) (ख) पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, पुल्लिग, बहुवचन, कर्ता कारक

(*iv*) (क) संख्यावाचक विशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'कक्षा' विशेष्य

(*v*) (क) जातिवाचक, संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन

6. (*i*) (क) मानवीकरण

(*ii*) (क) उत्प्रेक्षा

(*iii*) (ख) उत्प्रेक्षा

(*iv*) (ग) मानवीकरण

(*v*) (क) छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू।

7. (*i*) (घ) (क) और (ख) दोनों

(*ii*) (ख) साधु को किसी का सहारा नहीं लेना चाहिए।

(*iii*) (ख) गृहस्थ

(*iv*) (ग) वे मर चुके थे।

(*v*) (क) गंगा नदी

8. (*i*) (क) संगमरमर की मूर्ति पर वास्तविक चश्मा देखकर।

(*ii*) (ग) पतनशील सामंती वर्ग पर

9. (*i*) (क) असफल जीवन से

(*ii*) (ख) सुख और आनंद में कमी आ रही है।

(*iii*) (ख) वे अपनी कमजोरियों को प्रकट नहीं करना चाहते हैं।

(*iv*) (ग) मन का

(*v*) (ग) वह दूसरों के दुख, निराशा तथा असफलता की कहानी जानकर आनंद लेता है।

10. (*i*) (ग) परशुराम के लिए

(*ii*) (ख) जब मन प्रसन्न होता है, तो हर तरफ फागुन जैसा उल्लास दिखता है।

11. (क) हमारे विचार में पानवाले का कैप्टन को लँगड़ा व पागल कहना अनुचित था। एक तो वह असभ्य भाषा का प्रयोग कर रहा था और दूसरा वह एक सच्चे देशभक्त का मज़ाक उड़ा रहा था। इस व्यंग्यात्मक उक्ति से यह पता चलता है कि कैप्टन के प्रति उसके मन में आदर जैसी कोई भावना नहीं है। एक सामान्य नागरिक के लिए भी इस तरह के शब्दों का प्रयोग करना सर्वथा अनुचित है।

(ख) नवाब साहब के व्यवहार में दिखावे की भावना अधिक झलकती है। नवाब साहब खीरे को खिड़की से बाहर फेंककर अपनी रईसी का झूठा प्रदर्शन कर रहे थे। समाज-हित या देश की भलाई के लिए उत्साहपूर्वक किए गए कार्य को सकारात्मक सनक कहा जा सकता है। इसके लिए त्याग-बलिदान की जरूरत होती है।

(ग) लेखिका के कॉलेज की प्रिंसिपल द्वारा लेखिका के बारे में शिकायत किए जाने पर उनके पिता ने ऐसा कहा। प्रिंसिपल ने लेखिका की गतिविधियों से परेशान होकर उसके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई करने के संदर्भ में उनके पिता को कॉलेज बुलाया था। पिताजी को लगा कि लेखिका ने कोई भारी गलती की है।

(घ) बिस्मिल्ला खाँ की तुलना कस्तूरी मृग से की गई है। कस्तूरी मृग की नाभि में रहती है, लेकिन वह अपनी इस आंतरिक सुगंध से अनजान रहता है। बिस्मिल्ला खाँ भी एक श्रेष्ठ शहनाई वादक थे फिर भी उन्हें लगता था कि वे अभी ठीक से शहनाई नहीं बजा सकते।

12. (क) परशुराम जी लक्ष्मण को बार-बार वध करने की धमकी दे रहे थे। इससे क्रोधित होकर लक्ष्मण कहते हैं कि यहाँ कोई कुम्हड़े का कच्चा फल नहीं है, जिसे तर्जनी उँगली दिखाकर मारा जा सके यानि वे कायर नहीं है जो परशुराम की धमकियों से डर जाएँ। वे भी सूर्यवंशी और वीर योद्धा हैं।

(ख) उद्धव के योग संदेश से गोपियों की विरहाग्नि और बढ़ गई। वे पहले से ही कृष्ण के वियोग की विरहाग्नि में जल रही थीं। उन्हें लगा कि अब श्रीकृष्ण उनके पास नहीं आएँगे। ऐसे समय में उद्धव के योग संदेश ने उनके लिए आग में घी का काम किया। वे और अधिक व्याकुल हो गईं।

(ग) कवि ने बादलों की तुलना कवि से की है। जिस प्रकार बादल के हृदय में बिजली की आभा है, चमक है और ऊर्जा है। उसी प्रकार कवि के अंदर अपार ऊर्जा है। वह अपनी रचनाओं से समाज में परिवर्तन ला सकता है। कवि के हृदय में ऐसे क्रांतिकारी भाव छिपे होते हैं, जिनसे सामाजिक क्रांति संभव है।

(घ) 'यह दंतुरित मुसकान' पाठ में बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को विभिन्न बिंबों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। कवि को लगता है कि कमल तालाब छोड़कर उसकी झोंपड़ी में खिल उठा है। कठोर पत्थर पिघलकर जलधारा में बदल गया है। बबूल या बाँस के वृक्षों से शेफालिका के फूल झरने लगे हैं।

13. (क) बच्चा अपनी माँ से गहरे रूप में जुड़ा होता है क्योंकि माँ से बच्चे का संबंध जन्म से नौ माह पूर्व से होता है। इसलिए विपदा के समय वह अपनी प्राण रक्षा के लिए अपनी माँ के पास जाता है। यद्यपि पिताजी भी अपने पुत्र से स्नेह करते हैं, किंतु माँ जैसी कोमलता और ममता उनके पास नहीं होती जिसकी आवश्यकता बच्चे को होती है। परेशान या डरे हुए बच्चे को आँचल में छिपाना, लाड़-प्यार करना जैसे भाव माँ के पास ही होते हैं। माँ का आँचल बच्चों के लिए प्यार और शांति देने वाला चंदोवा है, जिसकी शीतल छाँह में वह स्वयं को सुरक्षित महसूस करता है। यही कारण है कि विपदा के समय बच्चा पिता के पास न जाकर माँ को ही प्राथमिकता देता है।

(ख) दुख की बात यह है कि वर्तमान पीढ़ी द्वारा प्रकृति को जाने-अनजाने क्षति पहुँचाई जा रही है। इनके लिए पर्वतीय स्थल सैर-सपाटे का केंद्र बन गए हैं। वे कूड़े को इधर-उधर फेंककर पर्यटन स्थलों को गंदा करते हैं। चट्टानों व दीवारों पर नारे या विज्ञापन लिखते हैं। बहते पानी में कूड़ा फेंकते हैं और पेड़-पौधों को हानि पहुँचाते हैं।

पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए लोगों को अधिक-से-अधिक वृक्षारोपण करने, पेड़ों को न काटने और प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों को कम-से-कम प्रयोग में लाने जैसे कदम उठाए जाने चाहिए। लोग सैर-सपाटा तो करें, लेकिन पर्यटन-स्थलों को गंदा न करें। सफ़ाई का पूरा-पूरा ध्यान रखें। पेड़-पौधों को नष्ट नहीं करें तथा चट्टानों और दीवारों पर कुछ न लिखें। इस तरह वे प्रकृति के सौंदर्य को बरकरार रखने में अपना योगदान दे सकते हैं।

(ग) हिरोशिमा में सब कुछ देखकर भी लेखक प्रत्यक्ष अनुभूति के अभाव में उस क्षण कुछ नहीं लिख सके। एक दिन अचानक सड़क पर घूमते हुए उन्होंने देखा कि एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली छाया है। उन्होंने कल्पना की कि विस्फोट के समय कोई वहाँ खड़ा रहा होगा और विस्फोटक किरणों ने उसे भाप बनाकर उड़ा दिया होगा। इस प्रकार समूची त्रासदी जैसे पत्थर पर अंकित हो गई। उन्हें लगा कि अणुबम विस्फोट की उन्होंने प्रत्यक्ष अनुभूति कर ली तथा वे स्वयं हिरोशिमा के विस्फोट के भोक्ता बन गए। भारत वापस आकर रेलगाड़ी में बैठे-बैठे ही उन्होंने कविता लिख डाली। इस आधार पर कहा जा सकता है कि हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के आंतरिक तथा बाह्य दबाव का ही परिणाम है।

14. (क) **सांप्रदायिक सौहार्द : राष्ट्र की उन्नति**

किसी भी राष्ट्र की उन्नति के लिए उस देश के लोगों में अपने देश के प्रति सच्चा प्रेम होना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए आपस में एक-दूसरे के प्रति भाईचारे का भाव होना चाहिए। यदि आपसी भाईचारे की भावना होगी तो किसी भी प्रकार के झगड़े होने की संभावना भी कम होगी। सभी लोगों को सभी धर्मों का सच्चे हृदय से सम्मान करना चाहिए। किसी की भी धार्मिक भावना को ठेस नहीं पहुँचाना चाहिए। यदि हम सभी धर्मों का पूरी तरह से सम्मान करेंगे तो हमारे मन में किसी के प्रति बैरभाव नहीं होगा। हमें हमेशा प्रयत्न करना चाहिए कि हम सदा मिल-जुल कर रहें और एक-दूसरे का पूरा सम्मान करें। ऐसा करने से सौहार्द की भावना बढ़ती है। यदि सौहार्द की भावना बढ़ेगी तो हमारा देश भी उन्नति करेगा। आपसी भाईचारे का भाव होने से कोई भी बाहरी ताकत हमारे देश को किसी भी तरह का नुकसान नहीं पहुँचा सकेगी। कोई भी राष्ट्र सही मायने में तभी उन्नति कर सकता है, यदि वहाँ की जनता आपसी सौहार्द का भाव रखें। देश की एकता व अखंडता की रक्षा के लिए आपसी सौहार्द अत्यंत आवश्यक है।

(ख) **इंटरनेट : वरदान या अभिशाप**

आज का युग तकनीकी का युग है। इंटरनेट ने आज के मानव जीवन को पूरी तरह से बदल दिया है। आज हम इंटरनेट के माध्यम से घर बैठे ही सब कुछ अपने कंप्यूटर, मोबाइल, लैपटॉप आदि पर खोज सकते हैं। हमें जिस भी विषय के बारे में जानकारी चाहिए उसे हम इंटरनेट के उपयोग से प्राप्त कर सकते हैं। चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, राजनीतिक क्षेत्र हो या चिकित्सा का क्षेत्र हो। चिकित्सा अथवा अनुसंधान संबंधित जानकारी पाने के क्षेत्र में सब जगह इंटरनेट उपयोगी सिद्ध हुआ है। आज कुछ लोग इसका प्रयोग अच्छे कामों के लिए न करके बुरे कामों के लिए करते हैं। जैसे– कुछ विद्यार्थी इंटरनेट पर शिक्षा संबंधी सामग्री एकत्रित करने में कम उपयोग करते हैं बल्कि वे कई बार गलत चीजों में फँसकर गुमराह हो जाते हैं। इसके गलत प्रयोग से कई बार वे साइबर क्राइम तक का शिकार हो जाते हैं। आज के समय में प्रत्येक मनुष्य इंटरनेट पर इतना अधिक निर्भर हो गया है कि वह इसके बिना जीवन अधूरा समझता है। इंटरनेट का अधिक उपयोग बुरा नहीं है परंतु इसका उपयोग विवेकशीलता के साथ करना चाहिए ताकि कुछ भी गलत होने से बचा जा सके।

(ग) **कोरोना : महामारी और बदलाव**

कोरोना एक ऐसी महामारी है जिसने विश्व के अधिकतर देशों को अपनी चपेट में ले लिया था। पूरे विश्व में इस महामारी के कारण हाहाकार मच गया था। सभी लोग घरों में कैद होकर रह गए थे। सबसे अधिक परेशानी बच्चों और बुजुर्गों को हुई क्योंकि बच्चे न स्कूल जा पा रहे थे और न ही बाहर खेलने। इसी प्रकार से बुजुर्ग लोगों का जीवन भी ठहर-सा गया था। वह बाहर घूमने के लिए नहीं निकल पा रहे थे। इस महामारी ने बच्चे, युवा, बुजुर्ग सभी लोगों के जीवन को पूरी तरह से प्रभावित किया है। कोरोना के दौरान लोगों के जीने के ढंग में अनेक बदलाव हुए। कोरोना के समय में सबसे अधिक बदलाव शिक्षा के क्षेत्र में हुआ। इस समय में तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में सबसे अधिक विस्तार हुआ। कोरोना महामारी ने जहाँ सभी को यह सोचने पर मजबूर किया कि अपनी प्रगति और विकास को प्राथमिकता दी जाए या जीवन बचाने को, वहीं सभी को जीवन जीने का एक नया तरीका सिखाया। यह सिखाया कि जीवन में किसी भी प्रकार की समस्या आने पर जीवन को सही ढंग से कैसे जिया जाए। अतः हमें किसी भी कठिन परिस्थिति का सामना धैर्य के साथ करना चाहिए।

15. सेवा में

प्रधानाचार्य महोदय

अ.ब.स. स्कूल, य.र.ल. नगर

उत्तर प्रदेश।

दिनांक : 20 जुलाई, 20xx

विषय–खेल सामग्री की व्यवस्था के संबंध में।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि विद्यालय में सभी छात्र-छात्राओं के लिए उपयुक्त खेल-सामग्री उपलब्ध नहीं है। जिसके कारण सभी छात्र-छात्राएँ खेल संबंधी गतिविधियों से वंचित रह जाते हैं। बैडमिंटन खेलने के लिए शटल उपलब्ध नहीं है। फुटबॉल खेलने के लिए नेट का अभाव है। पढ़ाई के साथ-साथ सभी विद्यार्थियों के लिए खेल भी अत्यंत आवश्यक है। विद्यालय के छात्र-छात्राओं के लिए खेल की प्राथमिकता को देखते हुए खेल-सामग्री की उचित व्यवस्था करना आवश्यक है जिससे कि वे नियमित रूप से खेल का अभ्यास कर सकें।

अतः आपसे अनुरोध है कि कृपया आप इन सुझावों पर ध्यान देते हुए विद्यालय में खेल-सामग्री का उचित प्रबंध शीघ्रातीशीघ्र कराएँ। इसके लिए हम सभी सदा आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी छात्र

क०ख०ग०

कक्षा 10 'अ'

क्रमांक-3

अथवा

परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक : 5 मार्च , 20xx

प्रिय मित्र माधव

सप्रेम नमस्ते।

मुझे तुम्हें यह बताते हुए अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि मैंने कुछ गरीब अशिक्षित बच्चों को शिक्षित करने की जिम्मेदारी ली है। आज के समय में शिक्षित होना बहुत जरूरी है। मेरे आसपास के क्षेत्र में बहुत सारे ऐसे बच्चे हैं जो अशिक्षित हैं किंतु वे पढ़ना चाहते हैं, पर धन के अभाव से वे पढ़ नहीं पा रहे हैं। मैंने अब उन्हें कुछ शिक्षा सामग्री वितरित की है और स्वयं उनको पढ़ाने के लिए समय निकालना प्रारंभ किया है जिससे वह आगे चलकर अपने लिए कुछ रोजगार ढूँढ़ सकें। यह कार्य करके मैं बहुत अधिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।

आशा है तुम इस कार्य में मेरा समय-समय पर उत्साहवर्धन करते रहोगे और मैं अपने इस कार्य में पूरी तरह सफल हो पाऊँगा।

तुम्हारा मित्र

मानव

16. अंग्रेजी अध्यापिका पद के लिए स्ववृत्त

नाम	–	प्रियांशी
पिता का नाम	–	श्री रमेश सिंह
माता का नाम	–	श्रीमती कमला देवी
जन्मतिथि	–	01/01/20xx
वर्तमान पता	–	C-150, नोएडा सेक्टर-50, उ. प्र.
स्थायी पता	–	उपर्युक्त
टेलीफोन नं०	–	0120-22xxxxxx
मोबाइल नं०	–	9878.....
ई-मेल	–	priyanshi @gmail.com

शैक्षणिक योग्यताएँ

क्र०सं०	परीक्षा/डिग्री/ डिप्लोमा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड/महाविद्यालय/ विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	दसवीं	2016	अ.ब.स. विद्यालय, सी.बी.एस.ई.	अंग्रेज़ी, हिंदी, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान,	प्रथम	71%
2.	बारहवीं	2018	अ.ब.स. विद्यालय, सी.बी.एस.ई.	अंग्रेज़ी, हिंदी, इतिहास, राजनीतिशास्त्र, सामाजिक विज्ञान	प्रथम	73%
3.	बी०ए०	2021	श.ष.स. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय	अंग्रेज़ी, इतिहास, राजनीति शास्त्र	प्रथम	75%
4.	एम०ए०	2023	श.ष.स. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय	अंग्रेज़ी	प्रथम	73%
5.	कंप्यूटर प्रोग्राम में डिप्लोमा	2023	इग्नू, नई दिल्ली	कंप्यूटर	प्रथम	84%

अन्य योग्यताएँ

- कंप्यूटर का अच्छा ज्ञान।
- हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का ज्ञान।

उपलब्धियाँ

1. स्नातकोत्तर में प्रथम श्रेणी से पुरस्कृत।
2. महाविद्यालय में आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान

अनुभव– अ.ब.स. विद्यालय में सहायक अंग्रेजी अध्यापिका के पद पर एक साल का शिक्षण-कार्यानुभव।

मैं प्रमाणित करती हूँ कि आवेदित पद के लिए मुझमें निर्धारित योग्यताएँ हैं। मैं यह विश्वास दिलाती हूँ कि मैं अपना कार्य पूरी निष्ठा के साथ करूँगी।

धन्यवाद सहित

प्रियांशी

अथवा

प्रेषक : pqr@gmail.com

प्राप्तकर्ता : abc@gmail.com

प्रतिलिपि (सीसी) : mt@gmail.com

गोपनीय प्रतिलिपि (बीसीसी) : xyz@gmail.com

विषय : दुर्घटनाग्रस्त होने से परीक्षा न दे पाने के संदर्भ में

महोदय,

उपर्युक्त विषयांतर्गत सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा दसवीं 'ए' की छात्रा हूँ। मेरी स्कूटी का एक्सीडेंट हो जाने के कारण मेरे पैर की हड्डी टूट गई है, जिसके कारण मैं कल वाली परीक्षा दे पाने में असमर्थ हूँ। डॉक्टर ने मुझे बिस्तर पर आराम

करने के लिए कहा है। मैं आपसे नम्र निवेदन करती हूँ कि आप मुझे अपनी यह परीक्षा बाद में देने की अनुमति प्रदान करें। मैं आपकी अति आभारी रहूँगी।

कृपया मेल स्वीकार कीजिए।

सधन्यवाद।

आपकी आज्ञाकारिणी शिष्या

आकांक्षा

17.

सुरक्षा ही बचाव	*सुरक्षा ही बचाव*	*सुरक्षा ही बचाव*
जीवन एक बार मिलता है इसे यूँ ही न जाने दें बेकार	सावधानी हटी दुर्घटना घटी	जीवन अनमोल है।
	जान है तो जहान है	
परिवहन मंत्रालय (भारत सरकार) नई दिल्ली द्वारा जनहित में जारी		

अथवा

संदेश

दिनांक : 2 नवम्बर, 20xx

पूर्वाह्न : 8:00 बजे प्रातः

प्रिय अनुज,

आज तुमने अपने विद्यालय में हुई वालीबॉल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर हम सभी को बहुत अधिक खुशी प्रदान की है। माताजी और पिताजी तुम्हारी इस उपलब्धि से बहुत प्रसन्न हैं। इस सफलता के लिए तुम्हें बहुत-बहुत बधाई! तुम इसी तरह सदा अपने जीवन के हर क्षेत्र में कामयाबी हासिल करते रहो। हमेशा स्वस्थ रहो, खुश रहो।

तुम्हारी दीदी

प्रिया